इस मन्त्र से मीठे की आहुति दें।

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा॥ इदमग्नये स्विष्टकृते - इदन्न मम॥

अब तीन बार गायत्री मन्त्र से एवं अन्य मंत्रों से आहुति दें।

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा ।
ओं त्र्यंबकम् यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योंमुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा ॥
ओं पूर्णमदः पूर्णमिदम् पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

इस मन्त्र से तीन बार आहुति दें ।

ओं सर्वं वै पूर्ण स्वाहा ॥
दोनो हाथों में यज्ञ शेष लेकर अपने हाथों को तपाये व उच्चारण करें –
ओं तनूपाऽग्नेसि तन्वं मे पाहि। ओं आयुर्दाऽग्नेस्यायुर्मे देहि ।
ओं वर्चोदाऽग्नेऽसि वर्चो में देहि । ओं अग्ने यन्मे तन्वा ऊनम् तन्म आपृण ।
तेजोऽसि तेजोमयि धेहि, वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि,
बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽस्योजो मयि धेहि,
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि।

यज्ञ – प्रार्थना

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए ॥1॥
वेद की बोलें ऋचाएं, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें ॥2॥
अश्वमेधादिक रचाएं यज्ञ पर उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकार, लाभ दें संसार को ॥3॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥4॥
भावना मिट जाए मन से पाप-अत्याचार की।
कामनाएं पूर्ण होंवें यज्ञ से नर नार की ॥5॥
लाभकारी हों हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गंध को धारण किए ॥6॥
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥7॥
प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणारूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥8॥

हमारी कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥
सब का भला करो भगवान, सब पर दया करो भगवान ।
सब निरोग रहें भगवान सबका सब विधि हो कल्याण ।
सब को दो वेदों का ज्ञान, सबको दो सदबुद्धि का दान ।

ओं स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयान्ताम् पावमानी द्विजानाम।
आयुः प्राणम् प्रजाम पशुम् कीर्तिम् द्रविणम् ब्रह्मवर्चसम् महयम्
दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥

माँ तुम्हारी कर रहा स्तुति शुद्ध मेरा मन करो ।
जननी हे सन्मार्ग पर हमको सदा प्रेरित करो ॥
चिरायु वर्चस प्राण शुभ संतान से सब युक्त हों ।
सत्कीर्ति पशुधन पा सभी आनन्दमय उन्मुक्त हों ॥

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव
शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओं॥

यज्ञ की महत्ता

यज्ञ का संबंध संपूर्ण मानव जाति से है। पर्यावरण शुद्धि से लेकर मानव की बौद्धिक, मानसिक, आध्यात्मिक शुद्धि का सर्वश्रेष्ठ माध्यम यज्ञ है। अग्नि में आहुति देने की अतिरिक्त यज्ञ की सारी क्रियाएँ प्रतीकात्मक होती है। जिनके पालन से मानव जाति का उत्थान सुनिश्चित है। अतः यज्ञ कोई नैमित्तिक कर्म ना होकर नित्य कर्म है। संपूर्ण मानव जाति को यज्ञ कर वातावरण को शुद्ध रखना चाहिए। यज्ञ करना किसी जाति विशेष का कर्तव्य न होकर संपूर्ण मानव जाति का कर्तव्य है।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है –
'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'

यज्ञ अत्यन्त ही व्यापक शब्द है। महर्षि दयानंद सरस्वती अपनी पंच महायज्ञ विधि में पांच यज्ञों (ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथियज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ) का उल्लेख करते हैं परंतु सामान्यतया यज्ञ शब्द से देव यज्ञ का स्वरूप सभी के समक्ष उपस्थित होता है। अग्निहोत्र हवन आदि देव यज्ञ की अन्य प्रचलित संज्ञाए हैं। देव यज्ञ की ऐतिहासिकता की बात करें तो साहित्यिक प्रमाणों में ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में ही अग्नि की स्तुति का प्रमाण मिल जाता है- 'अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्'

ओ३म्

महात्मा हंसराज पावन जयंती समारोह

समर्पण दिवस

D.A.V. PUBLIC SCHOOL
1989
Baghpat

DAV PUBLIC SCHOOL,
MEERUT ROAD, BAGHPAT

ईश्वर–स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्र

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।
तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरुप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है।।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजे।
मंगलमय गुण कर्म पदार्थ, प्रेम सिन्धु हमको दीजे ।।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन, सुख स्वरुप दुःख त्राता है।
सूर्य चन्द्रलोकादिक को, तू रचता और टिकाता है।।
पहले था अब भी तू ही है, घट घट में व्यापक स्वामी।
योग, भक्ति तप द्वारा तुझको, पावें हम अन्तर्यामी ।।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
तू ही आत्मज्ञान बलदाता! सुयश विज्ञ जन गाते हैं।
तेरी चरण शरण में आकर, भवसागर तर जाते हैं।।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु तुझसे लगन लगाने में।।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
तूने अपनी अनुपम माया से जग में ज्योति जगाई है।
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रकटाई है।।
अपने हिय-सिंहासन पर, श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं।
भक्ति भाव से भेंटें लेकर, तव चरणों में आते हैं।।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
योऽन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
तारे रवि चन्द्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख जगाया है।।
तू ही विश्व विधाता, पालक, तेरा ही हम ध्यान करें।
शुद्ध भाव से भगवन् ! तेरे भजनामृत का पान करें।।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥
तुझसे बड़ा न कोई जग में, सब में तू ही समाया है,
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है।।
हे सर्वोपरि विभो! विश्व का तूने साज सजाया है,
हेतु रहित अनुराग दीजिए, यही भक्त को भाया है।।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥
तू गुरु है, प्रजेश भी तू है, पाप पुण्य फल दाता है।
तू ही सखा, बन्धु मम तु ही, तुझसे ही सब नाता है।।
भक्तों को इस भव बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है।
तू है अज अद्वैत महाप्रभु! सर्वकाल का ज्ञाता है।।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमः उक्तिं विधेम ॥
तू है स्वयं प्रकाशरुप प्रभो! सब का सिरजनहार तू ही।
रसना निशिदिन रटे तुम्हीं को, मन में बसना सदा तू ही।।
कुटिल पाप से हमें बचाते रहना, हर दम दया निधान।
अपने भक्तजनों को भगवन्, दीजे यही विशद् वरदान ।।

आचमन मन्त्र

जल पात्र से दाहिनी हथेली में जल लेकर आचमन करें
ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।। इससे पहला
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।। इससे दूसरा
ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।। इससे तीसरा

दाहिना हाथ धोकर, बाई हथेली में जल लेकर अंग स्पर्श करें
ओं वाङ्म आस्येऽस्तु ।। मेरे मुख में वाक्शक्ति बनी रहे ।
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।। मेरी नासिका में प्राण शक्ति बनी रहे ।
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।। मेरी आखों में देखने की शक्ति बनी रहे।
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।। मेरे कानों में श्रवण शक्ति बनी रहे ।
ओं बाहोर्मे बलमस्तु।। मेरी भुजाओं में बल व शक्ति बनी रहे।
ओं ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु।। मेरी जंघाओं में ओज शक्ति बनी रहे।
ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।।
इस मन्त्र से शरीर के सभी अंगों पर जल छिड़कें।

निम्न मंत्र से दीपक प्रज्ज्वलित करें एवं चम्मच में कपूर लेकर यज्ञकुण्ड में अग्नि स्थापन करें।

ओं भूर्भुवः स्वः
ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नाद मन्नाद्यायादधे।।
ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सध स्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

समिधा आहुति

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम।।
स्वाहा के पश्चात् पहली समिधा रखें।
ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये - इदन्न मम ।।
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे – इदन्न मम ।।
इन दो मन्त्रों से दूसरी समिधा रखें तथा तीसरी समिधा निम्त मन्त्र से रखें ।
ओं तन्त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा पविष्ठ्य स्वाहा।। इदमग्नयेऽगिर से - इदन्न मम ।।

निम्न मन्त्र को पाँच बार बोलकर घी की पाँच आहुति दें।

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम।।

निम्न मन्त्रों से वेदी के चारों ओर जल छिड़कें।

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व।। इस मन्त्र से पूर्व में
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व।। इससे पश्चिम में
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व।। इससे उत्तर में
ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं न पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।
इस मन्त्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़काएँ।

केवल घी द्वारा आहुति दें।

ओम् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये - इदन्न मम।।
इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग में जलती हुई समिधा पर आहुति देवें।
ओम् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।।
इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में जलती हुई समिधा पर आहुति देवें।
ओम् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।।
ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय - इदन्न मम।।
इन दो मन्त्रों से यज्ञ कुण्ड के मध्य में दो आहुति देवें।

प्रातः कालीन आहुति के मन्त्र

अब घी के साथ सामग्री की आहुति भी देंवे।
ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।।
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजुरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।

सायं कालीन आहुति के मन्त्र

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।। ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।
ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।। (मन में उच्चारण कर आहुति दें)
ओं सजूर्देवेन सविना सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।।।
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदं अग्नये प्राणाय इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवे अपानाय इदन्न मम।।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय-इदन्न मम ।।
ओं भूर्भवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः – इदन्न मम ।।
ओम् आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो स्वाहा।।
ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।।
ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा ।।
ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानिविद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।।